1

प्रकृति की शोभा

(कविता)

प्रतिध्वनि

"प्रकृति में गहराई से झाँको, और तब तुम प्रत्येक चीज़ बेहतर तरीके से समझोगे।" – अल्बर्ट आइंस्टीन

ध्यान लगाकर जो तुम देखो,
इस जग की सुघराई को।
बात-बात में पाओगे तुम,
ईश्वर की चतुराई को।।

ये सब भाँति-भाँति के पक्षी,
ये सब रंग-बिरंगे फूल।
यह वन, लहलही लता,
वह नवकलिका शोभा की मूल।।

ये नदियाँ, ये झील, सरोवर,
कमलों पर भौंरों की गुंज।
बड़े सुरीले बोलों से यह,
गूँज रही बेलों की कुंज।।

ये पर्वत की रम्य-शिखाएँ,
शोभा-सहित, चढ़ाव-उतार।
निर्मल जल के बहते झरने,
सीमारहित महाविस्तार।।

हर प्रकार की ऋतु का आना,
नित नवीन शोभा के संग।
पाकर समय वनस्पति फलना,
रूप बदलना रंग-बिरंग।।

सूर्य-चन्द्र की शोभा अद्‌भुत,
बारी से आना दिन-रात।
यों अनंत तारा-मंडल से,
सज जाना रजनी का गात।।

यह समुद्र की पृथ्वी तल पर,
छाया तो जलमय विस्तार।
उसमें से मेघों के मंडल,
हो उत्पन्न अनंत अपार।।

गर्जन-तर्जन घन मंडल का,
वर्षा-बिजली का संचार।
सब में दिखे परमेश्वर की,
लीला अद्‌भुत अपरंपार।।

– श्रीधर पाठक

Scanned with CamScanner

जीवन मूल्य : प्राकृतिक सौंदर्य हमारे सुंदर जीवन का धरातल है। इसे हमें संजोकर रखना चाहिए।

शब्दार्थ

सुघराई	–	सुंदर रचना	भाँति-भाँति	–	तरह-तरह
लहलही	–	लहराने वाली	गुंज	–	गूँजना
कुंज	–	झाड़ियाँ, झुरमुट	महाविस्तार	–	बहुत अधिक फैलाव
अनंत	–	जिसका अंत न हो	रजनी	–	रात्रि
गात	–	शरीर	अपरंपार	–	जिसका पार न हो

पाठ्यविषयी मूल्यांकन (Curricular Assessment)

लिखित [Writing Skills (comprehension, spelling, vocabulary, grammar)]

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) इस संसार की रचना में किसकी चतुराई के दर्शन होते हैं?

(ख) पर्वत की चोटियों की क्या विशेषता है?

(ग) 'मेघों' के मंडल कहाँ तथा कैसे उत्पन्न होते हैं?

(घ) 'बेलों की कुंज' में किसके सुरीले बोल सुनाई देते हैं?

(ङ) कवि द्वारा चित्रित रात्रि के दृश्य की सुंदरता को अपने शब्दों में लिखिए।

2. सही शब्द चुनकर कविता की पंक्ति पूरी कीजिए–

(क) ये सब ..... के पक्षी, ये सब रंग-बिरंगे फूल।

(ख) ये नदियाँ, ये झील, सरोवर, कमलों पर ..... की गुंज।

(ग) ..... जल के बहते झरने, सीमारहित महाविस्तार।।

(घ) यों अनंत तारा-मंडल से, सज जाना ..... का गात।।

(ङ) यह ..... की पृथ्वी तल पर, छाया तो जलमय विस्तार।

3. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए– [Multiple Choice Questions (MCQs)]

(क) प्रस्तुत कविता किसके द्वारा रचित है?

(i) श्रीधर पाठक ◯ (ii) द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ◯ (iii) निराला ◯

Scanned with CamScanner

2 नन्हे जासूस

(प्रेरक कहानी)

प्रतिध्वनि

हे ईश्वर, मुझे अधिक लेने के नहीं, अधिक देने के योग्य बनाओ।

रोहन और हेमा ने स्कूल से आकर जैसे ही घर में प्रवेश किया कि बाहर के आँगन में एक चटाई पर दादा जी बैठे दिखे। उन्हें किसी काम में तल्लीन देखकर दोनों ठिठककर वहीं रुक गए।

हेमा ने कुछ कहना चाहा तो रोहन ने होठों पर अंगुली रखकर चुप रहने का इशारा किया। दोनों आँगन में रखी कार के पीछे छुपकर यह जानने का प्रयास करने लगे कि चटाई पर बैठे दादा जी आखिर क्या कर रहे हैं!

उन्होंने ध्यान से देखा कि दादा जी ने डस्टबिन का कचरा एक अखबार के ऊपर पलट रखा है और उस कचरे में से कुछ सामान बीन-बीनकर वे एक स्टील की प्लेट में रखते जा रहे हैं। डस्टबिन वहीं बगल में लुढ़का पड़ा है। हेमा ने धीरे से पूछा- "दादा जी यह क्या कर रहे हैं?"

"दादा जी शायद कचरे में से ऑलपिन बीन रहे हैं।" रोहन धीरे से बोला।

प्लेट में ऑलपिन गिरने से हल्की-सी खन-खन की आवाज आ रही थी। फिर बच्चों ने देखा कि दादा जी पुरानी कॉपियों के फटे पन्ने भी उठाकर, उनकी तह ठीक करके एक के ऊपर एक रखते जा रहे हैं।

हेमा ने दादा जी को टोकना चाहा किंतु रोहन ने फिर उसे रोक दिया। "आज हम छुपकर देखेंगे कि आखिर दादा जी इन ऑलपिनों और पुराने पन्नों का क्या करने वाले हैं।"

रोहन ने देखा कि दादा जी डस्टबिन के उस कचरे में से स्टेपलर पिन के बचे हुए टुकड़े भी प्लेट में रख रहे हैं। दोनों बच्चे धीरे से कमरे के भीतर आ गए, जैसे उन्होंने कुछ भी नहीं देखा हो। उन्होंने ठान लिया था कि आज दादा जी की जासूसी करके ही रहेंगे।

भोजन के बाद दादा जी अपने कमरे में चले गए और पुरानी कॉपियों के फटे-पुराने पन्नों को कैंची से काटकर सुडौल आकार देकर चौकोर बनाने में जुट गए।

बच्चों ने बाहर की खिड़की में अपना अड्डा बना लिया था, जहाँ से दादा जी साफ दिखाई दे रहे थे। रोहन और हेमा इधर-उधर की बातें करते रहे। कभी स्कूल की, कभी अपने-अपने साथियों की, ताकि दादा जी को आभास न हो सके कि उन पर नजर रखी जा रही है।

Scanned with CamScanner

एक घंटे के भीतर उन्होंने कागजों की छोटी-छोटी आठ दस कॉपियाँ बना ली थीं।

दोनों बच्चे उत्सुक थे कि देखें दादा जी उन कॉपियों का क्या करते हैं? फटे-पुराने कागज तो नगरपालिका की कचरा गाड़ी में डालने के लिए होते हैं, फिर दादा जी ये क्या कर रहे हैं? आज बच्चों की नजर सिर्फ़ दादा जी पर थी। वे दूसरे सभी काम कर तो रहे थे पर ध्यान रह-रहकर दादा जी की तरफ जा रहा था।

शाम को दादा जी घूमने के लिए निकले। बच्चों ने देख लिया था कि दादा जी ने वह छोटी-छोटी कॉपियाँ एक छोटे-से थैले में रख ली हैं और कुछ चॉक एवं पेंसिल के टुकड़े भी। चलते-चलते दादा जी झोंपड़-पट्टियों की तरफ मुड़ गए और एक झोंपड़ी के सामने रुक गए।

पहले से ही वहाँ उपस्थित चार-पाँच बच्चों ने उन्हें घेर लिया। "दादा जी आ गए! दादा जी आ गए!", कहते हुए उन्होंने अपने हाथ ऊपर कर दिए जैसे उनको पता हो कि दादा जी आज कुछ सामान बाँटेंगे।

दादा जी ने अपने थैले से कॉपियाँ निकालीं और उन बच्चों को बाँटने लगे और चॉक और पेंसिलों के टुकड़े भी बच्चों को वितरित करने लगे।

"दादा जी हमें भी! दादा जी हमें भी!", बच्चे हाथ बढ़ाकर चॉक और पेंसिलें ले रहे थे। दादा जी हँसते हुए सामान बाँटकर प्रसन्न हो रहे थे। अचानक रोहन और हेमा जो उनका चुपके-चुपके पीछा कर रहे थे, उनके सामने प्रकट हो गए। हेमा जोर से चिल्लाई, "दादा जी!", रोहन भी जोर से चिल्लाया, "दादा जी, आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

दोनों को अचानक सामने पाकर दादा जी हतप्रभ रह गए। फिर ठहाका मारकर हँसने लगे। "अच्छा, तो तुम लोग मेरा पीछा कर रहे थे।", उन्होंने हँसते-हँसते रोहन का कान पकड़ लिया। "दादा जी, हम लोग जानना चाहते थे कि आप कचरे में से क्या एकत्रित करते हैं और आज आपकी पोल खुल गई। दादा जी आप फटे-पुराने कागज क्यों इकट्ठे करते हैं? यह कचरा तो बाहर फेंकना चाहिए।", हेमा ने कहा।

"नहीं बेटी, दुनिया में प्रत्येक चीज़ की कीमत होती है। जो सामान हम बेकार समझकर फेंक देते हैं वह दुनिया के सैकड़ों-हजारों बच्चों के काम आ सकता है। ऐसे कितने बच्चे हैं जो थोड़ा-सा भी सामान बाजार से नहीं खरीद सकते। कहते हैं कि बूँद-बूँद से सागर भर जाता है। ऐसे ही फेंके जाने वाले फालतू सामान से न जाने कितने बच्चों का भविष्य बन सकता है। जैसे एक-एक ईंट जोड़कर मकान बनता है और तिनके-तिनके के जुड़ने से रस्सी बन जाती है, जो बड़े-बड़े वजनी सामान को उठा लेती है, वैसे ही यह छोटी-छोटी बेकार समझकर फेंकी गई चीज़ें देश-दुनिया की बड़ी आबादी के काम आ सकती हैं। रोहन, तुमने जो कॉपियाँ गुस्से में फाड़ दी थीं, उनको काम लायक बनाकर मैंने इन बच्चों में बाँट दिया। देखो, कितने खुश हैं यह बच्चे! स्टेपलर पिन के टुकड़े, चॉक तथा पेंसिलें जिन्हें तुम लोग प्रतिदिन फेंकते हो, देखो आज किसी के काम आ रहे हैं।"

रोहन बोला "हमें माफ कर दीजिए दादा जी! हम लोग छोटे हैं, यह सब नहीं जानते। हम आगे से ऐसी गलती

Scanned with CamScanner

नहीं करेंगे।"

"और मेरी जासूसी?", जोर से हँसते हुए दादा जी ने पूछा।

"नहीं करेंगे! नहीं करेंगे! हम जासूसी भी नहीं करेंगे!"

दोनों बच्चों ने एक-दूसरे के हाथ में हाथ फँसाकर और हाथ ऊपर करते हुए नारा लगाया और दादा जी से लिपट गए।

जीवनमूल्य : हमें चीज़ों की बरबादी नहीं करनी चाहिए क्योंकि हम उन्हें जरूरतमंद व्यक्तियों को दे सकते हैं।

शब्दार्थ

तल्लीन	–	संलग्न/काम में खोया हुआ	फालतू	–	बेकार
प्रयास	–	प्रयत्न	लायक	–	योग्य
हतप्रभ	–	जिसकी प्रभा नष्ट हो गई हो	एकत्रित	–	इकट्ठा

पाठ्यविषयी मूल्यांकन (Curricular Assessment)

लिखित [Writing Skills (comprehension, spelling, vocabulary, grammar)]

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) रोहन और हेमा ने घर में प्रवेश करते ही क्या देखा?

(ख) दादा जी क्या कर रहे थे?

(ग) बच्चों ने दादा जी की जासूसी करने की क्यों ठानी?

(घ) दादा जी का पीछा करके बच्चों ने क्या देखा?

(ङ) इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

2. सही कथन पर (✓) का तथा गलत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए–

(क) दादा जी को काम में तल्लीन देख दोनों बच्चे खेलने निकल गए।

(ख) दादा जी कचरे में से ऑलपिन बीन रहे थे।

(ग) दादा जी झोंपड़-पट्टी के बच्चों को टॉफियाँ बाँटने लगे।

(घ) दोनों बच्चों द्वारा अपनी जासूसी के बारे में जानकर दादा जी बहुत नाराज हुए।

(ङ) हमारा फेंका हुआ फालतू सामान किसी के काम आ सकता है।

Scanned with CamScanner